राष्ट्र के युवा-निर्माण हेतु ग्यारहसूत्रीय कार्यक्रम

यही बनेगा हमारा 'यूथविजन डॉक्यूमेंट'

विगत एक वर्ष से निरंतर इन पृष्ठों में हमारे युवाक्रांति संबंधित विभिन्न प्रकल्पों की चर्चा सभी पढ़ते रहे हैं। अब उसका एक मध्य बिंदु आ गया है, जब हम एक विराम लेकर फिर द्रुतगति से आगे बढ़ेंगे एवं 2026 तक निरंतर चलते रहेंगे। यह मध्य बिंदु दो वर्ष से (वसंत पर्व 2016 से 2018 वसंत तक) चले आ रहे युवाक्रांति वर्ष का समापन एक विराट 'युगसृजेता आयोजन' के रूप में है। यह नागपुर (महाराष्ट्र) नगर में 26, 27, 28 जनवरी की तारीखों में होने जा रहा है। इसे इसकी गुणवत्ता एवं भागीदार युवाओं के संकल्पों के माध्यम से जाना जाएगा न कि भागीदारों की संख्या द्वारा। स्थान की सीमा होने के कारण प्रथम दो दिन मात्र दस हजार संकल्पित पंजीकृत युवाओं को स्वीकृति दी जा रही है। अंतिम दिन 28-1-18 को विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति में 'युवाविजन दस्तावेज' के प्रस्तुतीकरण के साथ इसका समापन होगा। आइए, इस दस्तावेज की पृष्ठभूमि इस अंक में जान लें।

प्रस्तुत पंक्तियों में ऐसे आदर्शनिष्ठ युवाओं को गढ़ने एवं जोड़ने की बात की जा रही है, जो किन्हीं निश्चित उद्देश्यों में संलग्न रहेंगे। उन्हीं के चारों ओर उस समर्थ युवासंगठन की कल्पना की जाएगी, जिसकी चर्चा पूज्यवर गुरुदेव करते रहे।

(1) साधक युवा—हमारे युवा को आत्मनिर्माण से आरंभ कर राष्ट्रनिर्माण के लिए संकल्पित होना है। 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' सूत्र पर उसका पूरा विश्वास होगा। साधक युवा से आशय है—ऐसा कर्मठ कार्यकर्त्ता, जो जीवन-साधना द्वारा स्वयं को निरंतर परिष्कृत बनाता रहेगा। उसकी यह जीवन-साधना चौबीस घंटों की होगी। वह इंद्रिय संयम, विचार संयम, अर्थ संयम एवं समय संयम पर पूरी तरह निष्ठावान रहेगा। यही प्रक्रिया उसे उत्कृष्ट बनाएगी। नियमित उपासना करेगा; ताकि वह परिमार्जित सुसंस्कारित होता रहे तथा अपने सत्कार्यों द्वारा आराधना के, समाज सेवा के, राष्ट्र के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में अपने श्रम की, समय की आहुतियाँ देता रहेगा। जिन नए युवाओं से मिलेगा, उन्हें अपने आचरण से प्रभावित कर जोड़ेगा एवं अपने आंदोलन को निरंतर गतिशील बनाता रहेगा।

(2) संगठित युवा—हमारा युवा अपनी इकाई को संगठित इकाई के रूप में विकसित करेगा। संगठन में ही सर्वाधिक शक्ति है। 'संघौ शक्तिः कलौयुगे' कहा गया है। कई समर्थ युवा मिलकर पूरे संगठन में प्राण भर देते हैं। वह अपने युवामंडल, संस्कृतिमंडल को, महाविद्यालयों-विश्वविद्यालयों में 'दिया' (डिवाइन इंडिया यूथ असोसिएशन DIYA) को सक्रिय कर एक समर्थ संगठन का रूप देगा, जो सीधे शांतिकुंज से निर्देश लेकर सारे कार्यक्रमों को व्यवस्थित रूप देते रहेंगे। ग्रामीण युवाओं-शहरी युवाओं के अलग-अलग मंडल हर जिला-शहर-महानगर के अंग होंगे। कार्य की दृष्टि से सभी में एकरूपता होगी। युवा चेतना सत्र निरंतर आयोजित कर ये सभी युवा प्रशिक्षित होते रहेंगे एवं नए-नए प्रकल्पों से जुड़े रहेंगे।

(3) युगप्रवक्ता युवा—हमारा युवा ऐसा प्रखर संदेश स्थान-स्थान पर देने में प्रवीण होगा कि हर क्षेत्र, भाषा प्रधान क्षेत्रों में अपनी बात मुखरता से कह सके। हमारे सभी आंदोलन, पंच महाअभियानों को प्रमुखता से अपनी वाणी व लेखनी द्वारा साकार रूप दे सके। समय-समय पर उनमें निखार लाने के लिए वह प्रशिक्षण सत्र भी आयोजित कर सके, ऐसा कौशल उसका विकसित किया जाएगा। देश के प्रत्येक जोनल केंद्रों में ऐसे प्रवक्ता-संगठन में कुशल युवा तैयार किए जाएँगे; ताकि सारा युवा आंदोलन 2018 से 2020, 2021 से 2023 एवं 2024 से 2026 इन तीन काल खंडों में क्रमिक रूप से विकसित हो एक सशक्त इकाई के रूप में तैयार हो अखंड दीप की शताब्दी वर्ष प्रक्रिया में इन सबकी भागीदारी करा सके।

(4) **स्वावलंबी युवा**—हमारा इन नौ वर्षों की अवधि में विकसित होने वाला युवा स्वावलंबी होगा। अगणित नूतन प्रकल्पों में विनिर्मित हमारे उत्पादों द्वारा वह स्वयं स्वावलंबी बनेगा, ऐसे अनेकों को संगठित कर उन्हें भी आत्मनिर्भर, समर्थ एवं ढेरों रोजगार प्रदान करने वाली योजनाओं द्वारा राष्ट्र को समर्थ-समृद्ध बनाने में गतिशील होगा। स्वदेशी-स्वावलंबन-गोसेवा पर आधारित ये इकाइयाँ हर गाँव, ब्लाक, तहसील प्रखंड एवं जिलों में गतिशील होती देखी जा सकेंगी। स्वावलंबी लोकसेवी मंडलों (स्वालोकम्) से यह विलक्षण आर्थिक क्रांति बहुत तीव्रगति ले लेगी।

(5) **व्यसनमुक्त हमारा युवा**—स्वास्थ्य की दृष्टि से एक सशक्त समाज का निर्माण करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। जितने प्रकार के नशे आज राष्ट्र में हैं, उनका पूर्णतः उन्मूलन कर सारे प्रांतों को व्यसनमुक्त बनाना हमारे युवा का एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य होगा। इसके लिए रैलियों द्वारा जनजागरण, जगह-जगह कार्यशालाएँ, फिल्म एवं सोशल मीडिया द्वारा जनजागरूकता पैदा की जाएगी। 'डिएडिक्शन कैंपस' स्थान-स्थान पर लगाए जाएँगे; ताकि पीड़ित व्यक्तियों को आदत से छुटकारा दिलाया जा सके। संकल्पपत्र भराए जाएँगे एवं इसके लिए आध्यात्मिक उपचारों की भी मदद ली जाएगी। युद्धस्तरीय यह प्रयास इस देश की सृजनशील युवाशक्ति को निश्चित ही नशामुक्त कर स्वस्थ बनाएगा। धीरे-धीरे पूरे राष्ट्र को हम व्यसनमुक्त कर सृजन की दिशा में गतिशील बना देंगे।

(6) **प्रवासी युवा**—अपने कार्यक्षेत्र को गतिशील कर स्थान-स्थान पर जाकर युवा चेतना जागरण शिविर लगाएगा। बाल संस्कारशालाओं की महत्ता समझाकर उनकी स्थापना कराएगा। नए युवा मंडल-योग स्वास्थ्य मंडल-आदर्श ग्राम मंडल-वृक्ष गंगा अभियान के मंडल से लेकर भागीरथी जलाभिषेक अभियान के बारे में जन जागरूकता बढ़ाएगा। ये सभी आंदोलन अपने गायत्री परिवार को गुरुसत्ता से आशीर्वाद के रूप में मिले हैं। हमें इनमें अधिक-से-अधिक लोगों की सक्रियता बढ़ानी चाहिए। हमारे उन्नत भारत जिसकी हम कल्पना कर रहे हैं, ये मूल धुरी हैं। इनके अलावा आदर्श विद्यार्थी कार्यशाला स्कूल-कॉलेजों में आयोजित की जाएगी, जिसमें पॉवर पाइंट के द्वारा मार्गदर्शन दिया जाएगा।

(7) **ग्रामीण युवा**—युगऋषि की ग्रामतीर्थ योजना को गति देगा। हमारे ग्रामीण युवा आदर्श ग्राम आंदोलन को सक्रिय करेंगे तथा ग्रामीण व कस्बाई स्तर पर स्वच्छता अभियान, गाँव के उत्पाद को, गाँव में खपाने हेतु प्रोसेसिंग, गौकेंद्रित अर्थव्यवस्था, व्यसनमुक्ति कार्यक्रम, गाँव के मार्गों-संपर्क मार्गों की सफाई, उनके जनसहयोग द्वारा नवनिर्माण-आर्गेनिक खेती को बढ़ावा, वृक्षारोपण अभियान, पलायन रोकना एवं ग्रामीण स्तर पर रोजगार पैदा करना, ग्रामीण स्कूलों में पुस्तकालय योजना, संस्कारशालाएँ तथा खेल-महाकुंभों की योजना बनाएँगे।

(8) **युवतियाँ**—परमपूज्य गुरुदेव के नारी सशक्तीकरण आंदोलन हेतु सक्रिय होंगी। दहेजमुक्त विवाह एवं घरेलू हिंसा से बचाव, नारी स्वास्थ्य आदि पर वे सक्रियतापूर्वक कार्य करेंगी। अपने मंडल बनाएँगी एवं संगठन शक्ति का महत्त्व ग्रामीण-कस्बाई-शहरी युवतियों को समझाएँगी। नारी मंडल स्थान-स्थान पर सक्रिय रूप से कार्य करेंगे। जिनमें युवाशक्ति की महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी। नारी देश की आधी जनशक्ति है। परमपूज्य गुरुदेव जीवनभर इसी बिंदु पर कार्यरत रहे कि नारी-ही-नारी को सशक्त बना सकती है। हमें उनकी इस घोषणा को गाँव से शहर तक सक्रिय करके दिखाना है। नारी सुरक्षा, नारी संवेदना, नारी स्वास्थ्य, नारी स्वावलंबन एवं नारी संस्कार इन पाँच मुद्दों पर नारीशक्ति को कार्य करना है। युवतियाँ परदा-प्रथा से मुक्ति से लेकर उन्हें स्वावलंबी बनाने के विभिन्न प्रकल्पों को गतिशील करेंगी। एक तेजस्वी-प्रखर नारीशक्ति अपने साथ 5-6 प्रगतिशील चिंतन वाली युवतियों से लेकर यह सब कार्य कर सकती है।

(9) **दिव्यताजागरण कार्यशाला**—(डिवाइन वर्कशॉप) अब स्थान-स्थान पर संपन्न होना चाहिए। युवा को भटकाव से रोकने, नई दिशा देने, जीवन जीने की कला संबंधी लगभग बीस कार्यशालाएँ केंद्रीय युवा प्रकोष्ठ के पास तैयार हैं। इन्हें जहाँ जैसी परिस्थितियाँ हों—स्लाइड प्रोजेक्टर्स या पॉवर पाइंट प्रेजेंटेशन या मूवी द्वारा दिखाकर लोगों को सहमत किया जा सकता है। मानव को उत्कृष्ट कैसे बनाया जा सकता है, तनाव प्रबंधन कर रोगमुक्त कैसे हुआ जा सकता है तथा विभिन्न प्रकार के प्रबंधन की कला में कैसे निष्णात हुआ जा सकता है ?—यह

इन कार्यशालाओं से संभव है। अभी भी ये स्थान-स्थान पर संपन्न हो रही हैं, हमें आने वाले 8 वर्षों में सक्रियता के साथ नए क्षेत्रों तक इन्हें पहुँचाना है।

(10) **जनजागरूकता-कुरीति उन्मूलन में सक्रिय युवा,** कन्या भ्रूणहत्या, संस्कारों की महत्ता, दहेज, खरचीले विवाहों पर रोक-थाम, भिक्षा-व्यवसाय पर रोक तथा बचपन बचाओ आंदोलन, ऊँच-नीच, जात-पाँत, कामचोरी-हरामखोरी के विरुद्ध जनजागरूकता पैदा करना, हमारे युवा का प्रमुख कर्त्तव्य है। नकारात्मकता, निराशा, अवसाद दूर कर व्यक्तियों में आशावाद बढ़ाना, हमारे युवाओं को सीखना होगा। नशामुक्त एवं अवसादमुक्त जनशक्ति ही किसी समृद्ध विकसित राष्ट्र की धुरी है। हमारे युवा आंदोलन को यहीं से शुरुआत करनी है। सोशल मीडिया के अभिशप्त स्वरूप से जन-जन को अवगत कराके उसका रचनात्मक उपयोग भी हमें सिखाना होगा। नहीं तो, यह लत हमें भी निषेधात्मक सोच की ओर ले जा सकती है। व्हाट्सअप, फेसबुक, ट्वीटर, पोनोग्राफिक क्लिप्स और अफवाएँ बढ़ाने वाली क्लिप्स की गिरफ्त में अब ग्रामीण युवा भी आने लगे हैं। यह भी एक कुटेव—कुरीति है, जिसके विरुद्ध मोर्चा खोलना होगा।

(11) **स्वच्छ-स्वस्थ भारत के निर्माण को संकल्पित युवावाहिनी** हमें तैयार करनी होगी। स्वच्छता आंदोलन प्रधानमंत्री जी की सक्रिय भागीदारी से गति पकड़ गया है। गंगा जलाभिषेक अभियान द्वारा 2026 तक 51 सहायक नदियों सहित पूरी गंगा एवं यमुना को स्वच्छ-अविरल बनाने का हमारा लक्ष्य है। जलस्रोतों की नियमित सफाई-उस संबंध में जनजागरूकता-अधिकाधिक सहयोग एवं विज्ञान के निरंतर बढ़ते प्रयोगों द्वारा इसे और तीव्रगति देना होगा। गंगा प्रज्ञा मंडलों के निर्माण से जनजागरूकता बहुत बढ़ी है। हमारा देश धर्म प्रधान है, जहाँ नदी-मंदिरों पर बड़े-बड़े स्नान-मेले आयोजित होते हैं। सच्चा स्नान व पुण्य अर्जन कैसे हो? इसकी सक्रियता बढ़ानी होगी, नहीं तो परिश्रम दो दिन में ही निरर्थक सिद्ध होने लगेगा। स्वस्थ भारत के निर्माण हेतु कुपोषण से—फास्टफूड, मांसाहार से मोर्चा लेना होगा एवं व्यायामशालाएँ तथा हरित वाटिका, औषधि वाटिका, श्रीराम सरोवर, स्मृति उपवनों का युद्धस्तर पर स्थान-स्थान पर निर्माण करना होगा। इनके साथ-साथ ग्रामीण खेलों—व्यायाम प्रतियोगिताओं को भी गतिशील करना होगा। युवा तभी स्वस्थ बनेगा।

उपर्युक्त 11 कार्यक्रमों में 'यूथ विजन डाक्युमेंट' की एक संक्षिप्त संकल्पना दी गई है। इसका विस्तार 'युगसृजेता' कार्यक्रम नागपुर में सभी को पढ़ने को मिलेगा, साथ ही प्रतिज्ञापत्र भी जो सारे देश में युवक-युवतियाँ व भारत के नागरिक दुहराएँगे गणतंत्र दिवस के पावन दिन (26/1/2018) एवं (28/1/18) को हमारे मार्गदर्शक शीर्ष पुरुषों के सान्निध्य में उसकी कार्ययोजना समझेंगे। निश्चित रूप से यह युगसृजेता कार्यक्रम युवाक्रांति की दिशा में एक मील का पत्थर सिद्ध होगा, ऐसा समय बताएगा। ❑

अनिवार्य ज्ञातव्य

यह स्मरण दिलाने का समय है कि आप सभी पाठक बंधुओं को नए वर्ष का चंदा भी शीघ्रातिशीघ्र भेजना है तथा नए अन्य पाठक तैयार करने की प्रतिज्ञा भी लेनी है, कई साथी जोड़ने हैं। पत्रिका विविधता से भरी सामग्री के साथ आपको प्रतिमाह समय पर मिलती रहेगी। वार्षिक चंदा हर वर्ष की तरह 180 रुपये रहेगा। विदेश में यह 1400 रुपये प्रतिवर्ष होगा। आजीवन चंदा सुरक्षानिधि के रूप में 3500 रुपये होगा। चंदा 'अखण्ड ज्योति संस्थान' घीयामंडी, मथुरा 281003 के पते पर भेजें तथा पत्रिका की सामग्री हेतु पत्र व्यवहार शांतिकुंज, हरिद्वार से करें।